# अमेरिका के प्रभारी राजदूत
# भारतीय भाषाओं और खानपान में निपुण

***पीटर ए. बरली***
*अमेरिका के प्रभारी राजदूत*

**''फुलब्राइट प्रोग्राम को लेकर मैं बहुत आशावान हूं। यह मेरी ज़िंदगी में बड़ी घटना थी।''**

लखनऊ और बंगाल में खाना पकाना सीखना, हिंदी में समाचारपत्र पढ़ना, सिंहली में मठवासियों से बातचीत, नेपाली राजाओं का मध्यकालीन इतिहास लिखना- अमेरिकी दूतावास के प्रभारी राजदूत पीटर ए. बरली ने तब से खुद को दक्षिण एशियाई संस्कृति में सराबोर कर रखा है जब पीस कॉर वॉलंटियर और फ़ुलब्राइट स्कॉलर के पहले अनुभवों ने उन्हें इस बात के लिए तैयार किया कि वह अपनी ज़िंदगी एक राजनयिक के रूप में गुजारें।

अमेरिकी विदेश मंत्री हिलेरी क्लिंटन द्वारा 6 अप्रैल को उनकी नियुक्ति किए जाने के बाद अपने लगातार हफ़्ते में सातों दिन कामकाज के बीच छोटे से ब्रेक के दौरान बरली कहते हैं, ''जब मैं नेपाल में फ़ुलब्राइट स्कॉलर के बतौर था तो मैंने विदेश सेवा परीक्षा में भाग लिया और फिर विदेश सेवा में 33 साल बिताए।'' वह राष्ट्रपति बराक ओबामा के भारत में राजदूत के नामांकन और अमेरिकी सेनेट द्वारा उसके अनुमोदन तक भारत में प्रभारी राजदूत के बतौर काम करेंगे। ''मैं फ़ुलब्राइट कार्यक्रम के बारे में बहुत ही आशावान हूं। विभिन्न मिशन श्रीलंका, भारत और नेपाल में काम करने के दौरान मैं हमेशा फ़ुलब्राइट बोर्ड में सक्रिय रहा हूं और स्थानीय शिक्षाविदों और ग्रेजुएट छात्रों और फ़ुलब्राइट कार्यक्रम के दुतरफा आदान-प्रदान में शामिल होने वाले अमेरिकियों को प्रोत्साहित करता रहा हूं। मेरे जीवन में यह वाकई एक बड़ी घटना थी।''

नेपाल में 1960 के दशक में पहले साल में बरली सिर्फ एकमात्र फ़ुलब्राइट छात्र थे, तब से यह कार्यक्रम काफी आगे बढ़ा है। ''यह तथ्य कि इस प्रोग्राम के लिए भारत सरकार भी धन दे रही है, एक बड़ा कदम है और दोनों ही देश इस तरह के आदान-प्रदान.... और एक-दूसरे के समाज के बारे में बेहतर समझ को महत्व देते हैं। वह कहते हैं, ''भारत में यह प्रोग्राम अब वास्तविक भागीदारी प्रतिबिंबित करता है।''

जब बरली 1972-75 के दौरान कोलकाता में सेवा में थे तो ''उन दिनों अमेरिका-भारत संबंध न्यूनतम थे और दोनों देशों की सरकारों के बीच परस्पर संदेह था। मैं इस बात से आश्चर्यचकित हूं कि सभी क्षेत्रों में न्यूनतम और कमज़ोर संबंधों से अब लोगों और सरकारों के स्तर पर संबंध खिले हैं और ये व्यापक और गहन हुए हैं।''

श्रीलंका और अन्य स्थानों पर राजदूत के रूप में सेवा देने के बाद बरली वर्ष 2000 में सेवानिवृत्त हो गए। वह 15 बार भारत आ चुके हैं और इतिहास, आर्किटेक्चर और कुकिंग का अध्ययन कर चुके हैं। वर्ष 2006 में कोलकाता में बंगाली खाना बनाना सीखने की कक्षा में वह अकेले पुरुष थे। ''आजकल सभी बड़े शहरों में उन युवा महिलाओं के लिए कुकिंग क्लास लगती हैं जिनकी शादी होने वाली होती है। जो उच्च शिक्षा प्राप्त हैं लेकिन पांरपरिक घर की देखभाल के गुर जिन्होंने नहीं सीखे हैं।'' बरली कहते हैं, ''यह बहुत ही बढ़िया अनुभव था। हमें बहुत आनंद आया और मैंने 15 युवा महिलाओं के साथ बंगाली खाना बनाना सीखा।''

अपने घर फ़ोर्ट लॉडरडेल, फ़्लोरिडा में बरली हर सप्ताहांत खाना पकाते हैं। ''मैं भारतीय खाना पकाता हूं। मैं बहुत ज़्यादा मात्रा में खाना पकाता हूं और दोस्तों को बुला लेता हूं। बचा खाना दो से तीन रात्रि तक चलता है। आप जानते हैं कि भारतीय खाना अक्सर दूसरी और तीसरी रात ज़्यादा बेहतर स्वाद देता है, तब तक मसालों को मांस और सब्जियों में घुलने का ज़्यादा समय मिल जाता है। महाराष्ट्र एवं कर्नाटक के खाने में काम आने वाली खास पत्तियों को छोड़ दें तो फ़्लोरिडा में सभी चीजें मिल जाती हैं। ''मेरे छोटे से शहर में तीन भारतीय बाज़ार हैं जो सभी अमेरिका गए आप्रवासी गुजराती परिवारों के स्वामित्व में हैं और वे ही उन्हें चला रहे हैं।''

बरली भारत में कई भाषाएं बोलते हैं। इनमें से एक नेपाली है जो उन्होंने पीस कॉर वालंटियर और फ़ुलब्राइट प्रोग्राम के दौरान और बाद में नेपाल में डिप्टी चीफ़ ऑफ़ मिशन रहने के दौरान सीखी। उन्होंने बंगाली बोलना, पढ़ना और लिखना सीखा, सिंहली में में इंटरव्यू दिए और ''एक तरह की देसी हिंदी जानता हूं जिसमें शब्द व्याकरण की दृष्टि से बहुत शुद्ध नहीं होते लेकिन मैं बोल और समझ सकता हूं। मैं हिंदी भाषा के अखबार पढ़ सकता हूं।'' लेकिन उनके कार्यकाल के दौरान उनसे मिलने वाले किसी भी व्यक्ति को वह सतर्क करते हैं। ''मैं इनमें किसी भी भाषा में जांचे जाने से बच रहा हूं क्योंकि मैं इन सभी मैं खुद को अपरिष्कृत पाता हूं।'' **-एल.के.एल.**

*कानपुर, उत्तर प्रदेश में यूएसएड प्रोग्राम के तहत नि:शुल्क स्वास्थ्य देखभाल की सुविधा पा रही महिलाओं से मिलते हुए पीटर ए. बरली।*

*केरी पेल्कमैन/ यूएसएड*

**ज़्यादा जानकारी के लिए:**

**अमेरिका-भारत शैक्षिक प्रतिष्ठान**

http://www.usief.org.in/

**अमेरिकी दूतावास, नई दिल्ली**

http://newdelhi.usembassy.gov/